'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Vol. 1 Issue. 2
ISSN : 2348-7143 (Online)
April-June-2014

# प्रयोजनमूलक हिंदी और मीडिया

**प्रा. मनोज महाजन,**
सहा. प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
मू.जे. महाविद्यालय, जळगाव
[महाराष्ट्र ] भारत.

***मीडिया में जिस हिंदी का प्रयोग किया जाता है वह भाषा साहित्यिक भाषा से अलग होती है क्योंकि मीडिया केवल बुद्धिजीवी वर्ग के लिए न होकर सर्वसामान्य के लिए भी है वैसा साहित्य का नहीं। मीडिया में साहित्यिक भाषा सी सज्जा, अलंकार, छंद आदि का प्रदर्शन कर पांडित्य नहीं दिखाया जाता है। वह सर्वसामान्य नागरीक के समज में आये यह उसका उद्देश्य होता है। वही प्रयोजनमूलक भाषा है।***

प्रयोजनमूलक हिंदी की जब बात आती है तब हिंदी के मुख्यत: तीन रुप सामने आते हैं १) बोलचाल की हिंदी २) साहित्यिक हिंदी ३) प्रयोजनमूलक हिंदी। इन तीनों रुपों का उद्‌गमस्त्रोत मुख्यत: हिंदी भाष ही है। प्रस्तुत आलेख में प्रयोजनामूक हिंदी और मीडिया पर प्रकाश डालना मेरा उद्‌देश्य है।

सबसे पहले अगर देखा जाय कि प्रयोजन तो हर भाषा हर घटना हर व्यक्ति का होता है। तब फिर किसी भाषा के नाम के आगे प्रयोजनमूलक शब्द क्यूं लग रहा है ? उसका क्या तात्पर्य है ? ये सवाल निर्माण हाते हैं । अत: 'प्रयोजनमूलक हिंदी' पद युग्म में विशेषण-विशेष्य संबंध है। यहां प्रयोजन विशेषण है, तो हिंदी विशेष्य है। प्रयोजनमूलक बहुव्रीहि समास होने के कारण एक वृत्ति है। अत: इसका विग्रह संभव है, जो इस प्रकार है- "प्रयोजन है मूल जिसका" जैसा की मैने उपर लिखा है कि हर भाषा का कोई न कोई प्रयोजन होता है तो निश्चित तौर से हिंदी का भी प्रयोजन है। किन्तु हिंदी के आगे लगा हुआ शब्द हिंदी के क्षेत्र और उसके दायरे को परिसीमित करता है।

प्रयोजनमूलक हिंदी को विभिन्न नामों से अभिहित किया गया है जैसे- व्यावहारिक हिंदी, प्रयोजनी हिंदी, कामकाजी हिंदी, प्रयोजनपरक हिंदी, प्रयोगपरक हिंदी, Functional Hindi (फंक्शनल हिंदी), Applied Hind (अप्लायड हिंदी) आदि। प्रयोजनमूलक हिंदी की भाषा कुछ विद्वानोंने की है- डॉ.कैलाशनाथ पाण्डे- "किसी निश्चित लक्ष्य को ध्यान में रखकर प्रयुक्त की गई भाषा"[१] इनके साथ ही दुसरे विद्वान - डॉ.कामेश्वर शरण सहाय के शब्दों में- "विशेष प्रयोजन के प्रति आग्रहवश ही प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्ति का प्रसार हुआ है।"[२] विनोद गोरे के मतानुसार- "वस्तुत: प्रयोजन मूलक भाषा, भाषा का वह तथ्यपरक अर्जित सविशेष रुप है, जिसका प्रयोग विशेष अथवा कार्य-विशेष के संदर्भ में होता है।"[३] डॉ.शिवेंद्र वर्मा के अनुसार- प्रयोजनमूलक हिंदी तात्पर्य विषयबद्ध और परिस्थितीबद्ध हिंदी भाषा रुप से है।[४] डॉ.रघुवरी सहाय के मतानुसार- "प्रयोजनमूलक हिंदी की परिकल्पना यह मानकर चलती है कि

वह एक ऐसी शब्दावली होगी जो ज्ञान के सम्प्रेषण में काम आएगी, और इसीलिए बाकी शब्दावली से भीन्न होगी या उस पर आश्रित नहीं होगी।"५ आदि परिभाषाओं के आधारपर प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप को समझा जा सकता है।

संचार माध्यमों में जिस हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है उसे ही प्रयोजनमूलक हिंदी के नाम से अभिहित किया गया है। न केवल मीडिया में बल्कि "दूसरी ओर शेयर बाजार, रेल, हवाई जहाज, बीमा उद्योग, बैंक आदि औद्योगिक उपक्रमों, रक्षा, सेना, इन्जिनियरींग आदि प्राद्यौगिक संस्थानों तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों, आर्युविज्ञान, कृषी, चिकित्सा, शिक्षा, एम.आई. के साथ, विभिन्न संस्थानों में हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण पैड, स्टॉक रजिष्टर, लिफाफें, मुहरें, नामपट स्टेशनरी के साथ साथ कार्यालय ज्ञापन, परिपत्र, आदेश, राजपत्र, अधिसूचना, अनुस्मारक, प्रेस विज्ञाप्ति, निविदा, अपील, नीलाम, केबल ग्राम, मंजूरी पत्र पावती आदि में यह बहुत सुभीता और आसानी से प्रयुक्त की जा रही है। इतना ही नही, देश के संपूर्ण तीर्थस्थलों, पर्यटन स्थलों में इसके विशिष्ट रुप का प्रयोग हो रहा है, इसने आज बाजार तथा आधुनिकता के दबाव के कारण गांव हे हाट-बजार, गली-चौराहें, कल-कारखानें, कचहरी तथा सब्जी मंडियों में भी आगमन की सूचना साईन बोर्डोपर छपे विज्ञापनों तथा अन्य तरीकों से दे दी है।"[६]

मीडिया ने आज पूरी दुनिया में अद्‌भूत एकता पैदा कर दी है। "संदेश दे और ले सकने की क्षमता ने मानव के सामाजिक अंतरसंबंधों को एक विशेष स्वरुप दिया है। क्षमता का विकास इन संबंधों के क्षेत्र को विस्तारित और पुष्ट करता है। विचारों को स्थायित्व दे सकने की क्षमता जिस गति से विकसीत होती गई, उसी गति से उसकी संस्कृति की विविधता और जटिलता भी बढती गई। सीमित संचार साधनों के काल में मानव समाज छोटी-छोटी स्वतंत्र इकाइयों में खंडित रहा। इसके विपरित जन संचार माध्यमों के अभूतपूर्व विकास ने समसामायिक विश्व को संकुचित करके एक बडा-सा गांव बना दिया है।"[७]

**मीडिया के दो वर्ग :**

मीडिया दो वर्गोमें विभाजीत किया जा सकता है।

१) छापित माध्यम (प्रिंट मीडिया)

२) विद्युत प्रसार माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)

छापित माध्यम में समाचार पत्र और पत्रिकाएं आती है तो विद्युत प्रसार माध्यम में रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्युटर, सिनेमा आदि आते हैं।

छापित माध्यम में जो पहला प्रकार आता है समाचार पत्र का तो हिंदी में आज दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, नवभारत टाईम्स आदि प्रमुख समाचार पत्र है जो हिंदी में सर्वाधिक पढ़े जाते हैं । इनकी भाषा सरल होती है। क्योंकि

इसको पढनेवाले तबके के लोग साधारण होते है। उपर्युक्त उल्लेखित तीन समाचारपत्रों के अलावा और १५ समाचार पत्र हिंदी में छपतें हैं।

छापित जनसंचार माध्यम के अंतर्गत पत्रिकाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसमें समाचार पत्रों की तुलना में गहरा, गंभीर और स्तरिया साहित्य होता है। ऐसी पत्रिकाओं में समकालीन साहित्य, हंस, वागर्थ, कथा देश, नया, ज्ञानादेय, तहलका, आऊट लुक, अभिव्यक्ति, वटवृक्ष, अनुभूति, भारत दर्शन, तथा इनके साथ ही और ५५ पत्रिकाएँ हिंदी में छपती हैं।

विद्युत माध्यमों में रेडियो, दूरदर्शन और कम्प्युटर आतें हैं इनमें से सबसे पुराना माध्यम है रेडियो यह बहुत लोकप्रिय माध्यम था पहले केवल दो ही चैनल थे एक दिल्ली आकाशवाणी या स्थानीय आकाशवाणी और दूसरा विविध भारती बाद में निजी चैनलों की भरमार हुई आज कुल मिलाके १०० से भी अधिक रेडियो चैनल हिंदी में चलते हैं । इन रेडियों की भाषा हिंग्लीष होती है जो हिंदी और इंग्लिष को मिलाकर बोली जाती है काफी सफाई से इसका प्रयोग रेडियो जॉकी द्वारा किया जाता है। रेडियो के पश्चात आता है दूरदर्शन १९६५ तक दूरदर्शन केवल सामाजिक शिक्षा का उद्देश्य लेकर चला था। धीरे-धीरे मनोरंजन के कार्यक्रम भी दिखाये जाने लागे। इससे हिंदी भाषा का राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ जो हिंदी भाषा के लिए वरदान साबित हुआ। आज कुल मिलाकर ११६ चॅनेल्स हिंदी में प्रसारित किये जाते है। इनमें जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है वह नितांत साहित्यिक नहीं होती और नहीं साहित्यिक भाषा का आग्रह दर्शक करतें है इनमें प्रयोजनमूलक भाषा का प्रयोग किया जाता है।

कम्प्युटर में भी प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग किया जाता है। शुरुआत में आकृति, डॉस, लीप ऑफीस, आय. एस. एम., ऑफीस विन्डोज आदि सॉफ्टवेअर बाजार में आये। संचार की दृष्टि से वेबसाईट, इंटरनेट, ई मेल का अन्छा उपयोग लोग हिंदी में कर रहे हैं । इनके साथ सोशल नेटवर्किंग साईटस् जैसे फेसबुक, व्टिटर, आर्कुट और गुगल सर्च इंजीन भी हिंदी में उपलब्ध है तथा वीकिपीडिया भी हिंदी में उपलब्ध है।

मीडिया में सिनेमा का स्थान बहूत महत्त्वपूर्ण है। फिल्मों के कारण हिंदी का बहुत विकास हुआ और न केवल देश में बल्कि विदेश में भी हिंदी छा गई। खेल मीडिया में भी प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग सटीक रुप में किया जा रहा है।

'भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का कार्य अप्रैल १९६० में महामहिम राष्ट्रपति के आदेश के अनुसार अक्टुबर १९६१ में खेलकूद, पारिभाशिक शब्दावली के लिये वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग की स्थापना की। आयोग ने १९७३-७४ में इस संबंध में खेल के क्षेत्र के विद्वानों का परामर्श प्राप्त करके कार्य प्रारंभ किया। खेलकूद संबंधी आधुनिक संकल्पनाओं को सही-सही व्यक्त करने के लिए जहां कही भी

भारत की भाषाओं / भारतीय मूल के शब्द मिल सके है, उन्हे ग्रहण कर लिया गया है और उनके लिए नए शब्द स्थिर नहीं किए गए।"[८]

विज्ञापन मीडिया की जान है। विज्ञापन के बगैर मीडिया नहीं चल सकता। भारत में अगर विज्ञापन जन सामान्य तक पहुचाना हो तो हिंदी के अलावा कोई चारा नहीं सर्वेक्षणों से स्पष्ट होता है कि भूमंडलीकरण के इस दौर में बाजार की केंद्रिय भाषा हिंदी होती जा रही है। पत्रकार शुची बंसल के रिपोर्ट में बताया गया है कि- "सन २००६ में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में करीब १५०० करोड़ के विज्ञापन छपे है। चूंकि बडे शहरों का बाजार संतृप्त हो गया है। इसीलए विज्ञापनदाता छोटे शहरों में, ग्रामों और अर्ध ग्रामीण इलाकों पर जोर दे रहे है, जहां केवल हिंदी का ही बोलबाला है।"[९]

मीडिया में जिस हिंदी का प्रयोग किया जाता है वह भाषा साहित्यिक भाषा से अलग होती है क्योंकि मीडिया केवल बुद्धिजीवी वर्ग के लिए न होकर सर्वसामान्य के लिए भी है वैसा साहित्य का नहीं। मीडिया में साहित्यिक भाषा सी सज्जा, अलंकार, छंद आदि का प्रदर्शन कर पांडित्य नहीं दिखाया जाता है। वह सर्वसामान्य नागरीक के समज में आये यह उसका उद्देश्य होता है। वही प्रयोजनमूलक भाषा है। जिसका उद्देश्य सामान्य से सामान्य मनुष्य के रोजमर्रा की जिंदगी में उसका उपयोग होता हो। वही भाशा आगे चलकर फलती-फूलती और प्रचारीत होती है। भाषा प्रेमियों को भाषा की शुद्धता पर जोर जरुर देना चाहिए किन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कहीं हम उसे संकुचित तो नहीं बना रहे हैं । भाषा के विकास के लिए भाषा की उपयोगिता के लिए उसे समयानुसार एवं पीढी नुसार उसमें बदलाव आना / लाना आवश्यक है। ये बदलाव ही भाषा की जीवंतता है। अन्य भाषा के शब्दों को अपनी भाषा में ढालना चाहिए जिससे भाषा की उपयुक्तता बनी रहेगी। प्रयोजनमूलक हिंदी में यह अन्छे से हो रहा है, आवश्यकता है उसे और व्यापक स्तर पर ले जाने की।

**संदर्भ :-**

१. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, डॉ.कैलाशनाथ पाण्डेय, पृष्ठ क्र.४
२. प्रयोजनमूलक हिंदी : पाठ्य चर्चा की प्रासंगिकता, डॉ. कामेश्वर शरण सहाय, पृष्ठ क्र. १७
३. प्रयोजनमूलक हिंदी : विनोद गोरे, पृष्ठ क्र.१३
४. प्रयोजनमूलक हिंदी और शिक्षण सामग्री की समस्याएँ, डॉ. शिवेंद्र वर्मा का लेख, पृष्ठ क्र.४७
५. प्रयोजनमूलक हिंदी- डॉ. रघुवीर सहाय, पृष्ठ क्र.१७
६. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, कैलाशनाथ पाण्डेय, पृष्ठ क्र.०७
७. संचार और विकास, प्रो.श्यामचरण दुबे, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, डॉ.राजेंद्रप्रसाद व्याख्यानमाला, पृ.२
८. खेलकूल पारिभाषिक शब्दावली, केन्द्रिय हिंदी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा तथा समाजकल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ.१
९. 'हिंदी पेपर्स राइड मार्केट बुम', बिझनेस स्टँडर्ड- शुची बन्सल, २९ डिसें.२००६.